साक्षात्कार

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लेखक एवं आध्यात्मिक चिन्तक श्री प्रभुदयाल मिश्र से पंकज चौधरी की वार्ता।

प्रश्न– जब आप अमेरिका पहुचे तो आपको वहां कैसा लगा ?

उत्तर–हमारा यान जब पेरिस से सुबह उड़ा तो वह समय को पीछे धकेलते हुये आगे बढा जा रहा था और जब हमारा यान अमेंरिका पहुचा तो अतल महासागर की गहराईयों में नीचे झाकते हुये बादलों के बीच में देखा तो मुझे सुन्दर काण्ड की चौपाईया याद आ गई जिसमें तुलसीदास जी ने लंका का चित्रण स्वर्ग से किया है वहां मुझे दृश्य के बाद यही महसूस हुआ ।

और जब हम न्यूयार्क हवाई अडडे पर हवाई जहाज से उतरे तो हमारा बेटा अनुभव हमें लेने आया । जब हमारी कार सड़क से गुजर रही थी तो हमने देखा कि इतनी चौड़ी सड़कों (करीब 400 फीट) की तो भारत में कल्पना भी नहीं की जा सकती । और उसके बाद हमारा ध्यान बड़ी–बड़ी इमारतों अनेक ऐतिहासिक दृश्यों पर गया तो लगा कि अगर संसार में कहीं स्वर्ग है तो वह अमेरिका देश में ही है । यहां के लोगों में अनुशासन देखकर में स्तब्ध रह गया । और लोगों में क्या यहां तो जानवर, पक्षी , हवा तक में अनुशासन है जो भारत के किसी विद्यालय में नहीं होता जो कि अनुशासन आलय होते है । अनुशासन ही विकास का प्रथम अध्याय है वो अनुशासन अमेरिका की आवोहवा में हर समय रहता है । और जब मैने वहा भ्रमण किया तो मैंने देखा यहां के हवाई जहाज, हवाई अडडा, चौड़ी–2 सड़कें, गगनचुम्बी इमारतें, खूबसूरत उद्यान , बड़े–2 मैंदान तो मुझे अंदर से अहसास हुआ कि इनको ईश्वर ने ही बनाया होगा । और उसके बाद मैंने अपना विचार अपने बेटे अनुभव से प्रकट किया और कहां कि सुख, समृद्धि, स्वच्छता, अनुशासन अमेरिका की पहचान है ।

प्रश्न– अमेरिका में हिन्दी भाषा की क्या स्थिति है ?

उत्तर–जहां कही भी अमेरिका में गये वहां करीब 10 प्रतिशत भारतीय मिले । टूरिस्ट प्लेस, कुछ नगर तथा न्यूजर्सी नगर में भारतीयों की अधिकता है । और यह स्वाभाविक है जहां भारतीय होंगे वहां हिन्दी होगी । अगर कोई व्यक्ति अंग्रेजी नहीं जानता है तो उसे वहां कोई कठिनाई नहीं होगी । क्योंकि पूरे अमेरिका में भारतीय लोग प्र्याप्त मात्रा में है । एक जगह हम गये वहां हमारी मुलाकात 6 साल की बच्ची और 8 साल के बच्चे से हुई । इन दोनों ने मुझे पूरी विभीषण गीता सुनाई जो कि आश्चर्य जनक बात थी । इन बच्चों ने हमें तबला सुनाया, गाना सुनाया, नृत्य दिखाया । और जब हमने इन बच्चों से सत्य साई बाबा की बात कहीं तो उन्होंने तुरंत साई बाबा के चमत्कारों के दृश्य हमकों इन्टरनेट पर दिखायें । इसके बाद इन बच्चों ने मुझसे प्रश्न किया कि अगर साई बाबा इतने चमत्कारी है तो इस दुनिया से क्राइम क्यों नहीं समाप्त कर देते, बिन लादेन जैसे आतंकवादियों को क्यों नहीं मार देते । तौ मैंने उत्तर दिया कि बाबा इस दुनिया में विनाश के लिए नहीं अवतरित हुये है वह संरचनात्मक कार्यो तथा समपरिवर्तन के लिए अवतरित हुये है ।

मेरे विचार में अमेरिका में हिन्दी भाषा की अपेक्षा हिन्दु और हिन्दुस्तान की संस्कृति के प्रति अधिक लगाव दिखता है । वहां के लोग हिन्दुस्तान की संस्कृति को विश्व की धरोहर मानते है । हमारा देश प्राचीन समय में जो समृद्धि और खुशहाली का देश था उसका गुणगान हमारी संस्कृति करती है । इसी कारण विश्व के लोग हमारी संस्कृति के गुणगान गाते है । क्योंकि उनकों हमारी संस्कृति में हमारा प्राचीन गौरवपूर्ण इतिहास दिखाई देता है । जिस कारण हमारी संस्कृति विश्व के हर देश को आकर्षित करती है ।

प्रश्न– 11 सितम्बर के हादसे बे बाद अमेरिका में सुरक्षा व्यवथा में क्या सुधार किये गये हैं ?

उत्तर– 11 सितम्बर का दिन अमेरिका के इतिहास में काला दिवय हसे गया है । न्यूयार्क की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर और पेण्टागन विश्व की दो बडी इमारते जो क्षण मात्र में ध्वस्त हो गई यह आतंकवाद का परिणाम था । जिसमें हजारों लोग क्षण मात्र में कालकवलित हो गये आगे ऐसे कोई हादसे न हो इसके लिए अमेरिका ही नहीं विश्व के हर देश को हाथ में हाथ डालकर लडना चाहिए जब हम इस स्थान पर घूम रहे तो उ।पर दो हेलरकाप्टर आसमान में पहरेदारी कर रहे थे । जब हम पानी के जहाज के द्वारा समुद्री टापू पर जा रहे थे तो पहले भारी जांख पुलिस द्वारा की गई गली–गली में मजबूत अमेरिकन सिपाही (स्त्री ओर पुरूष)हाथ में रिवोल्वर लिए हुए तैनात देखे जा सकते है।

प्रश्न– भारत अमेरिका से कितना पीछे है और उसे अमेरिका के बराबर या उससे आगे पहुचने में कितना समय लगेगा ?

उत्तर– यह बड़ा ही विचित्र लगता है यह देश इतने आगे कैंसे पहुच गया । बीत बड़ा क्षेत्रफल, बहुत सारे संसाधन प्रकृति ने इस देश को दिये है जिस कारण इसके विकास में इनकी अहम भूमिका रही होगी । इसके अलावा यहां प्राकृतिक प्रकोप भी है । कहीं कहीं असीम वर्षा होती है और कहीं कहीं भारी शीत । जिसके बाबजूद भी गगन चुम्बी इमारते अटटालिकायें , संग्रहालय, आश्चर्यजनक पुल, हवाई अडडे, रेल यातायात, परिवहन, उपग्रह, देश ने कैसे बना लिये इसके पीछे जरूर एकजुट संकल्प शक्ति ही हो सकती है । जिसने यह आश्चर्यजनक कार्य करके दिखाया । अमेरिका से भारत की तुलना बहुत कठिन लगती है । लेकिन संसार में असंभव नाम की कोई चीज नहीं है । नेपोलियन ने तो असंभव नाम का शब्द ही अपनी किताब में से हटा दिया था । हमारा देश अमेरिका से पीछे है और कितना पीछे है इसके लिए विश्व में कोई थर्मामीटर नहीं बना है । लेकिन फिर भी मुझमें जितनी समझ है उसके हिसाब से भारत अमेरिका से बहुत पीछे है और उसके बराबर और उससे अधिक आगे तो दूर आस–पास पहुचने में भी भारत को बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ेगा । भारत के अमेरिका से पीछे रहने के अनेक कारण है । पहला कारण है यहां नागरिकों में भाईचारे की भावना नष्ट हो गयी है, देश भावना नगण्य हो गयी है, लोग देश के नियम कानून पर ध्यान नहीं देते, कानून के प्रति सम्मान खत्म हो गया है । यहां का शासन, प्रशासन योजनाओं को सही ढंग से क्रियान्वित नहीं करते है । इसका खामियाजा भारत को भुगतना पड़ रहा है । यही वह पहला कारण है जो भारत को दिनोंदिन पीछे ले जा रहा है इसका मतलब यह नहीं कि भारत में वह शक्ति नहीं है जो भारत को संसार के नक्शे पर कोहिनूर की तरह चमकायेगी । ऐसा मैं नहीं मानता अगर वह शक्ति नहीं होती तो भारत प्राचीन समय में इतना समृद्ध एवं शक्तिशाली नहीं होता तथा इसको सोने की चिड़िया होने की उपमा नहीं मिली होती ।

दूसरा कारण यह है कि भारत एक लंबे समय से गुलामी की मार झेलता आ रहा है जिस कारण यहां के अमूल्य संसाधन नष्ट हो गये, संस्कृत एवं सभ्यता विखंडित हो गयी, नियम कानून के ढंग बदल गये है । एक से एक आश्चर्यजनक चीजे आक्रमणकारी या तो अपने देश में ले गये या उनको नष्ट करने में सफल रहे जिस कारण हमारा देश सोने की चिड़िया से नबाजे जाने वाला, बेकारी और लाचारी की चिड़िया से नबाजा जाने लगा । लेकिन हमारे देश में अगर अभी–अभी कोई शक्ति जीवित है जिससे देश को संसार के नक्शे पर चमकाया जा सकता है तो वह है देश भक्ति की शक्ति । जो कि भारत के नागरिकों में कूट–2 कर भरी है । यहीं वह शक्ति है जो देश को बहुत आगे ले जा सकती है और कहा भी गया है कि भारत भविष्य में विश्व की सबसे बड़ी शक्ति होगा यह बात अतिश्योक्तिपूर्ण लगती है । लेकिन क्रांतियां हुई है और क्रांति भारत में किस रू‍ में और कब आयेगी अनुमान लगाना कठिन है ।

अमेरिका में भाईचारे की भावना कूट–कूट कर भरी है । वहां के नागरिक देश के कानून के आगे नतमस्तक हो जाते है । इनमें देश के प्रति राष्ट्र भावना अतनी तो नहीं है जितनी भारतीय नागरिक अपने देश के प्रति रखता है । लेकिन वहां देश के नाम पर एक हो जाते है, और मर मिटने को तैयार हो जाते है । इससे प्रतीत होता है कि इनका मूल तत्व एकता है । और कहां भी गया है कि संगठन में शक्ति होती है और वहां के नागरिक जितना अपने देश के प्रति प्रेम रखता है उतना विश्व के प्रति । इसका ही परिणाम होगा कि अमेरिका में अपने देश के नागरिकों की अपेक्षा विश्व के देशों के नागरिक अधिक निवास करते है । यह भी देश को आगे बढाने मे बहुत बड़ा कारण है । कहा भी गया है वसुद्यैव कुटुम्बकम ।

प्रश्न –अमेरिका में इतनी खूबी है, इतना समृद्ध है (हर दृष्टि में) तो क्या आपको ऐसा लगता है कि मेरा अगला जन्म अमेरिका में हो ?

उत्तर–मेरा अगला जन्म भारत में ही हो और मेरी क्या भारत के इर विद्वत व्यक्ति की यही इच्छा रहती है कि उसका हर बार जन्म भारत में ही हो । हालांकि अमेरिका हर दृष्टि से समृद्ध है और इस समृद्धि को देखकर यह इच्छा हर व्यक्ति की हो सकती है । लेकिन यह इच्छा मेरी नहीं है क्योंकि किन्हीं कारणों से भारत अमेरिका से पिछड़ रहा है लेकिन मैं नहीं समझता कि भारत में संसाधनों, क्षमता, आध्यात्मिकता, विचार और वह साधन जो किसी देश के विकास करने में सहायक होते है की कमी है । इसलिए मैं भारत को कमजोर नही मानता ।

मेरे एक मित्र अमेरिका में है और पेशे से वह डाक्टर है जिस संबंध में उन्होंने मुझसे कहा कि अगर मेरा जन्म मनुष्य योनि में होता है तो उसकी भूमि भारत ही हो । अगर कुत्ता, बिल्ली का होता है तो उसकी भूमि अमेरिका ही हो । क्योंकि यहां कुत्ता, बिल्ली आदि जानवरों को बड़े प्यार और हिफाजत से रखा जाता है ।

अमेरिका में भारत गली–2 मोहल्ले में बस गया है । यहां ताजमहल नाम का होटल है तथा यहां भारतीय व्यंजन हर होटल एवं रेस्टोरेंट में मिल जायेंगे, यहां हर्बल चाय बहुत मात्राा में मिलती है । हिन्दी समाचार प्त्र निकलते है । हिन्दी के अलावा गुजराती अखबार भी निकलता है । यहां के निवासी भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान करते है ।

अगर व्यक्ति दूसरों के महलों को देखकर अपनी झोपडी छोड़ना चाहता है तो इसका मतलब है तो वह व्यक्ति राष्ट्र ध।र्म को नहीं जानता और अगर जानता होता तो उसके मन में यह विचार कभी जन्म नहीं लेता । बल्कि इसके विपरीत उस व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि मेरी झोपड़ी कब और किसी दिशा में परिश्रम करने पर बडी इमारत का रू‍ लेगी । और इसी राष्ट्र धर्म को ध्यान में रखते हुये मैंने भगवान से हर बार जन्म भारत में ही मांगा है और ऐसा विचार करने पर मुझे अपने उपर गर्व का अनुभव होता है ।

प्रश्न– अमेरिकावासियों के मन में गांधीजी के प्रति कैसी भावना है और क्या आपको वहां गांधीजी की कोई प्रतिमा दिखाई दी ?

उत्तर–अमेरिका वासियों में गांधीजी के प्रति बहुत श्रद्धा के भाव है वैसे तो गांधीजी ऐसी प्रतिमा है जो भारत अमेरिका क्या पूरे विश्व में सम्मान तथा स्थान के पात्र है । उन्होंने भारत में जो स्वतंत्रता संग्राम की मशाल जलाई दसका उदाहरण अन्य किसी देश के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में नहीं मिलता । गांधीजी राजनैतिक संत के साथ–साथ आध्यात्मिक संत भी थे और उन्होंने कहा है कि कोई व्यक्ति तो आध्यात्मिक उन्नति करता रहेगा और उसके पड़ोसी कष्ट भोगते रहेंगे । मेरा अद्वेव में विश्वास है । मैं मनुष्य जाति को ही नहीं प्राणी मात्र के ऐक्य को मानता हूँ । इसलिए एक आदमी को आध्यात्मिक लाभ होता है तो उसके साथ।–2 सम्पूर्ण जगत को भी होता है । इससे प्रतीत होता है कि गांधीजी अपने देश की भलाई और

समृद्धि के ही नहीं बल्कि पूरे विश्व की भलाई एवं समृद्धि के लिए सोचते थे इसलिए उनका सम्मान करना और महान पुरूषों में स्थान रखना विश्व का हर देश गौरव का अनुभव करता है । उनमें से एक देश अमेरिका ही है ।

अमेरिका के विचारक थोरो ने महात्मा गांधी को बहुत प्रभावित किया और मार्टिन लूथर को अमेरिका का गांधी कहा जाता है । इन वाक्यों से पता लगाया जा सकता है कि गांधीजी का अमेरिका से और अमेरिका का गांधीजी से क्या संबंध है गांधीजी की प्रतिमा मुझे दो जगह दिखाईदी एक प्रतिमा । न्यूयार्क के संग्रहालाय में दिखी उसी संग्रहालय में अभी कुछ समय पहले अमिताभ बच्चन की एक मोम की प्रतिमा स्थापित की गयी है । जो अति आकर्षक लगती है ।

प्रश्न– इस्कान के प्रति अमेरिका में विकास किस प्रकार हो रहा है जो कि संस्था प्रभुपादजी द्वारा स्थापित की गयी थी ?

उत्तर– इसके बारे में वहां में विशेष लोगों के सम्पर्क में नहीं आ पाया लेकिन इसके संबंध में मुझे जितनी जानकारी है उसके हिसाब से भक्ति वेदान्त पूरे अमेरिका में बडी तीव्रगति से फेल रहा है । वहां हर बडे शहर में मंदिरों के निर्माण दिनों दिन हो रहे है जिनमें नियमित पूजा, भजन आदि मंदिर से संबंधित क्रियायें होती है । वहां कृष्णा के प्रति लोगों में जों भावना विकसित हुई है वह जरूर प्रभुपादजी द्वारा स्थापित इस्कान सोसायटी की परिणाम है । यह संस्था आज जिस रू‍प से कृष्णा का प्रचार प्रसार कर रही है वह अत्यंत प्रशंसनीय है । इस संस्था के द्वारा विश्व में लगभग 350 मंदिर स्थापित कर दिये गये है । जिनमें एक–एक मंदिर करोड़ों–2 की लागत का है । तथा गीता की पुस्तक का अनेकानेक भाषाओं में अनुवाद करके करोडों प्रतिया पूरे संसार में बिखेर दी गयी है ।

प्रभुपादजी के संबंध में मुझे जो कुछ भी ज्ञान है उसका विवरण इस प्रकार है –

एक बार प्रभुपाद अपने शयन कक्ष में सो रहे थे उसी निद्रावस्था में भगवान श्री कृष्ण ने स्वप्न दिया । और स्वप्न में कहा मेरा प्रचार प्रसार विदेशों में जाकर करों । और उस समय प्रभुपादजी ने मन में पक्का निश्चय कर लिया और उन्होंने अमेरिकाको प्रथम स्थान चुना । वह अमेरिका जाने की योजना में जुट गये ।उन्होंने गीता का अपने हाथ से अंग्रेजी में अनुवाद किया, इसके बाद पानी के जहाज की किराये की व्यवस्था की ओर पूरी तैयारी के बाद 67 वर्ष की उम्र में हाथ में पानी के जहाज का टिकट और 7 डालर लेकर अमेरिका निकल पडे । जब प्रभुपादजी पानी के जहाज में यात्रा कर रहे थे कि मैं अमेरिका में 7 डालर से क्या करूंगा इस विचार के तुरंत बाद उनके मन ने तुरंत आवाज दी कि पतवार तो मेरे हाथ में है क्यों चिंता करते हो । यह आवाज श्री कृष्ण की थी और उसके बाद श्री प्रभुपाद निश्चित हो गये और जब उनका जहाज अमेरिका पहुचां तो प्रभुपादजी जहाज से उतरकर एक सडक के किनारे पहुच गये और थोडी देर आराम करने के बाद उसी किनारे पर नृत्य करने लगे और मुख से महामंत्र का जाप करने लगे । हरे राम हरे राम । राम राम । हरे हरे हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण । हरें हरे ।

कुछ देर बाद वहां भीड एकत्र होने लगी लोगों ने उनसे वहीं कुछ प्रश्न किये तथा प्रभुपाद जी ने उनके उत्तर दिये । जिन उत्तरों से संतुष्ट होकर लोग उनके अनुयायी बनने लगे । यही वह देश है जहां इस काम की आधारशिला रखी गयी ।

प्रश्न– अमेरिका में किस धर्म के एवं किस देश के लोग अधिक निवास करते है?

उत्तर– अमेरिका की सबसे बडी विचित्रता यहीं है कि वहां अधिकांश लोग बाहर के ही है । वहां सभी धर्मो के लोग बडी प्रसन्नता तथा प्यार से रहते है । यहां के नेटिव रेड इंडियन न के बराबर है । एकआश्चर्य की बात है कि द्वितीय महायुद्ध में ऐसे रेड इंडियन लडने वालों की संख्या केवल दो थी । संक्षेप में सबसे

अधिक संख्या उन यूरोपीयनों की है जो व्हाइट अमेरिकम कहलाते है । दूसरी संख्या में नीग्रो है जो अफ्रीकी अमेरिकन कहलाते है ।तीसरे न0 पर एशियन की है । करीब 12 प्रतिशत इसी में 3 प्रतिशत भारतीय सम्मिलित है ।

प्रश्न– अमेरिका में बोद्ध धर्म की क्या स्थिति है ?

उत्तर– अमेरिकन विश्वविद्यालयों में बोद्ध धर्म का तुलनात्मक अध्ययन कराया जाता है । इसके लिए विश्व विद्याालय में स्वतंत्र विभाग है । इसके अलावा वहा सभी धर्मो का अध्ययन कराया जाता है । बौद्ध धर्म संबंधी शोध कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है । तथा यह विचारणीय है कि अमेरिका में चीन और जापान की अपेक्षा बौद्ध बहुत कम है । इन देशों में बौद्धों की अधिकता है ।